'सुगम संगीत की रचनाओं में रागदारी का विशेष महत्व'

बेगम अख्तर और केएल सहगल की गायन शैली से रूबरू हुए विद्यार्थी

जासं • लखनऊ : सुगम संगीत की रचनाओं में शब्दों के भाव, रागदारी और गायन शैली का विशेष महत्व है। सुरों के साथ भावों का सटीक संयोजन ही किसी प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाता है। शनिवार को भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित सुगम संगीत कार्यशाला में पुणे की संगीत कलाकार विदुषी संगीता नेरुरकर ने विद्यार्थियों और शोधार्थियों को गायन की इन्हीं बारीकियों से परिचित कराया। उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों के जरिए सुगम संगीत की विविध विधाओं व उनकी विशेषताओं को समझाया।



उप्र संगीत नाटक अकादमी में बेगम अख्तर की स्मृति में आयोजित यादें कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कुलतार सिंह व सहयोगी कलाकार • जागरण



भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित सुगम संगीत कार्यशाला में पुणे की विदुषी संगीता नेरुरकर ने गायन की शैली की सीख दी • विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के गायन विभाग की ओर से आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ कुलपति प्रो. मांडवी सिंह और विदुषी संगीता नेरुरकर ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। संगीता नेरुरकर ने अपनी प्रस्तुतियों का आरंभ 'एक बंगला बने न्यारा, रहे कुनबा इसमें सारा' गीत से किया। इसके बाद रूपक ताल में 'दिल में तेरी याद है, होंठों पे तेरी फरियाद है', तीनताल में 'झूलन झुलाओ झुलाओ री' और कहरवा ताल में 'अब दिन बीतत नाहीं दुख के' जैसी रचनाएं प्रस्तुत कीं। संगीता नेरुरकर ने भारतीय संगीत जगत के प्रतिष्ठित कलाकार बेगम अख्तर और केएल सहगल के संगीत एवं योगदान पर अपने शोधपरक कार्यों के अनुभव भी साझा किए। कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने कहा कि ऐसी कार्यशालाएं विद्यार्थियों को संगीत की विविध विधाओं और महान कलाकारों की समृद्ध परंपरा से जोड़ती हैं। विश्वविद्यालय के कुलसचिव अतुल कुमार ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अतिथि शिक्षिका डा. कृतिका त्रिपाठी ने किया। गायन विभाग की विभाग की अध्यक्ष प्रो. सृष्टि माथुर, तालवाद्य विभाग के अध्यक्ष डा. मनोज कुमार मिश्रा, अधिष्ठाता नृत्य मंजुला पंत, नृत्य विभाग के अध्यक्ष ज्ञानेंद्र दत्त बाजपेई, सहायक आचार्य डा. रुचि खरे उपस्थित रहे।

गजलों में जीवंत हुईं बेगम अख्तर की 'यादें'

'यादें' समारोह में गुलशन भारती, स्वाती रिजवी और अंकुश निर्मल ने दीं प्रस्तुतियां, श्रोताओं ने खूब की तारीफ

जागरण संवाददाता • लखनऊ : गजल की हर पंक्ति में दर्द, हर सुर में मोहब्बत और हर ठहराव में बेगम अख्तर की यादें...। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के संत गाडगे महाराज प्रेक्षागृह में सजी सुरों की महफिल ने श्रोताओं को गजल गायिकी के सुनहरे दौर की याद दिला दी। मौका था गजल साम्राज्ञी पद्मभूषण बेगम अख्तर की स्मृति में आयोजित वार्षिक समारोह 'यादें' का। इसमें स्थापित कलाकारों के साथ नई पीढ़ी के गायकों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी।

समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलन और बेगम अख्तर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। अकादमी की उपाध्यक्ष विभा सिंह ने कहा कि बेगम अख्तर की आवाज में दर्द और ठहराव का अनूठा संगम था। उनकी स्मृति में आयोजित यह समारोह एक ओर प्रतिष्ठित कलाकारों को मंच देता है तो दूसरी ओर नवांकुरों की प्रतिभा को सामने लाने का अवसर भी प्रदान करता है। शाम की शुरुआत युवा गायक अंकुश निर्मल ने बशीर बद्र की गजल 'सर झुकाओगे तो पत्थर भी खुदा हो जाएगा' से की। इसके बाद उन्होंने अमीक हनफी की रचना 'मैं हवा हूं, कहां वतन मेरा' सुनाकर अपनी गायकी का परिचय दिया। स्वाती रिजवी ने मीर तकी मीर की 'उल्टी हो गईं सब तदबीरें', गालिब की 'ये न थी हमारी किस्मत कि विसाल-ए-यार होता' और मोमिन की गजल 'वो जो हम में तुम में करार था' से महफिल में रंग जमाया। उस्ताद गुलशन भारती ने बेगम अख्तर की गाई प्रसिद्ध दादरा 'कहूं कैसे शरम की है बात' और ठुमरी 'नैना रो रो हारे' प्रस्तुत कर उन्हें सुरों से नमन किया। इसके बाद कुलतार सिंह ने परवीन शाकिर की 'चेहरा मेरा था निगाहें उसकी' और शकील बदायूनी की 'ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया' सुनाकर तालियां बटोरीं। कार्यक्रम में वरिष्ठ गजल गायक युगांतर सिंदूर मुख्य अतिथि और वरिष्ठ कथक नृत्यांगना डा. पूर्णिमा पांडेय विशिष्ट अतिथि रहीं।